Knowledgeable Research (KR) 2026, (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

हिंदी साहित्य की रचनात्मकता पर कृत्रिम मेधा का प्रभाव

डॉ. स्मिता चालीकवार
सायन्स कॉलेज, नांदेड़

शोध सार

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence) ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में गहरा हस्तक्षेप किया है और साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। हिंदी साहित्य की सृजनात्मक प्रक्रिया, आलोचना, अनुवाद, प्रकाशन तथा पाठकीय व्यवहार पर AI का प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। यह तकनीक एक ओर लेखन, संपादन, अनुवाद और डिजिटल मंचों के माध्यम से साहित्य के विस्तार की नई संभावनाएँ प्रस्तुत कर रही है, वहीं दूसरी ओर मौलिकता, संवेदनशीलता, मानवीय भावबोध तथा सांस्कृतिक अस्मिता से जुड़ी गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न कर रही है। प्रस्तुत लेख में हिंदी साहित्य की सृजनात्मकता पर कृत्रिम मेधा के प्रभाव का विश्लेषण करते हुए उसके अवसरों और चुनौतियों का संतुलित मूल्यांकन किया गया है। लेख का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि AI को साहित्य का विकल्प नहीं, बल्कि सहायक उपकरण के रूप में अपनाकर हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच पर अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है।।

बीज शब्द: *कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल, तकनीक, सोशल मीडिया, ब्लॉग्स, यूट्यूब चैनल, ऑनलाइन शिक्षा, ई-कॉमर्स व डिजिटल मार्केटिंग, साहित्यिक अनुवाद,।*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ. स्मिता चालीकवार
Email: smitaawattamwar@gmail.com

प्रस्तावना

आज का युग तकनीक का युग है और कृत्रिम मेधा (AI) इसका महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। AI का प्रभाव अब केवल विज्ञान और तकनीक तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हिंदी साहित्य की सृजनात्मक प्रक्रिया को भी प्रभावित कर रहा है। लेखन, अनुवाद, संपादन और डिजिटल प्रकाशन जैसे क्षेत्रों में AI नई संभावनाएँ पैदा कर रहा है।

हिंदी साहित्य की रचनाएँ अब डिजिटल माध्यमों, सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के कारण अधिक पाठकों तक पहुँच रही हैं। इससे नए लेखकों को अवसर मिल रहे हैं, लेकिन साथ ही मौलिकता, मानवीय संवेदना और भावनात्मक गहराई से जुड़ी कुछ चुनौतियाँ भी सामने आ रही हैं।

यह लेख हिंदी साहित्य की सृजनात्मकता पर कृत्रिम मेधा के प्रभाव, उसके लाभ और सीमाओं को सरल भाषा में समझने का प्रयास हैं|

नवर्तमान युग कृत्रिम बुद्धिमता (AI) का युग है। जहाँ यह तकनीक हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही है। हिंदी साहित्य जो भारत की सांस्कृतिक विरासत का प्रमूख्य स्तंभ है इस युग मे नई चुनौतियों का सामना कर रहा है। साथ ही अपना अवसर भी प्राप्त कर रहा है। AI के साधन जैसे CHAT GPT, Grogle Gemini और भारत का अपना krutim AI अब हिंदी में कहानियाँ तथा अनुवाद उत्पन्न कर रहे है। कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य की सृजन प्रक्रिया को एक सहायक उपकरण के रूप में प्रभावित कर रही है। और नए रचनात्मक अवसर पैदा हो रहे है। लेकिन साथ ही मौलिकता, नैतिकता, और पांरपारिक लेखकत्व पर महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी खड़ी हो रही है। हिंदी साहित्य के संदर्भ में कृत्रिम बुद्धिमता के बढ़ते प्रभाव, गहण विश्लेषन साहित्यिक रचनाओ में AI के वर्तमान अनुप्रयोगों जैसे अनुवाद, सृजनात्मक लेखन, और आलोचनात्मक विश्लेषन मौलिकता, भावनात्मकता गहराई और

सांस्कृतिक सुक्ष्मताओं से जुडी सृजनात्मक चुनौतियों पर भी कृत्रिम मेधा का प्रभाव दिखाई देता है। "कृत्रिम बुद्धिमता और साहित्य का अंतसबंध ईक्कीसवी सदी में अकादमिक विमर्श का एक यूंगातकारी क्षेत्र बनकर उभरा है"।1 यह केवल तकनिकी प्रगति नही बल्कि एक सांस्कृतिक परिघटना है। जो सृजन संप्रेषण और आलोचना की सदियों पूरानी

प्रक्रियाओं को मौलीक रूप से बदलने की क्षमता रखती है। " आज साहित्य की रचनात्मकता नई AI के चलते और भी दिलचस्प हो गई है। आज कृत्रिम बुद्धिमता साहित्य की दुनिया में ई-पुस्तके, विडिओ, पॉडकास्ट, सिमूलेशन जैसे इंटरनेट संसाधनों तक पहुँच प्रदान कर रही है"| 2 हिंदी साहित्य की रचनात्मकता पर AI का प्रभाव कुछ अवसर और कुछ चुनौतियों को भी सामने लाता है-अगर हम इसमे अवसर को देखते है तो उसमे "वैस्विक प्रसार और अनुवाद – Al अनुवाद टूल्स प्रेमचंद निराला या महादेवी वर्मा की रचनाओं को विश्व की अन्य भाषाओं में आसानी से उपलब्ध करा रहा है"| 3 भारत का कृत्रिम AI जो 22 भारतीय भाषाओं को समझता है और 10 में कुटेंट जनरेट करता है |(हिंदी सहीत) हिंदी साहित्य की पहुँच बढ़ा रहा है।

"रचनात्मक सहायता: लेखक AI को प्लॉट आइडिया संपादन या शोध के लिए उपयोग कर सकते है विज्ञान कथा में AI पहले से विषय बना रहा है। जैसे- अरविंद मिश्र की रचनाओं में रोबोटिक्स और A1 पर केंद्रित कहानियाँ"|4 AI वर्तनी व्याकरण की गलतियाँ को सुधारने। और प्रुफरीडिंग में मदत करते है जिससे लेखको का समय बचता है और गुणवत्ता बेहतर होती है। "डिजिटल प्लेटफार्म और संरक्षण :- Pratilipi, Wattpad जैसे प्लेटफार्म और AI रेकमेडेशन सिस्टिम नए पाठक जुड़ा रहे है। AI पूराने ग्रंथो को डिजिटाइज कर सुरक्षित कर रहा है।" 5 AI संचलित एप्लीकेशन पाठको की रूचियों केअनुसार सामग्री का सुझाव देते है साथ ही वॉइस टूल्स हिंदी साहित्य को ऑडिओबुक और पॉडकास्ट के रूप में प्रस्तुत कर रहे है जिससे नए श्रोता वर्ग तक पहुंच संभव हुई है।" नई विधाए AI डिजिटल स्टोरी होलिंग और माल्टमिडिया साहित्य को बढ़ावा दे रहा है।"6 इसके साथ साथ कवर डिजाइन ले आवूट और डेटा विश्लेषन में सहायक है। जिससे प्रकाशन नही उदयोग की लागत कम हो रही है और ई-बुक इंटारैक्टिव कहानियों जैसे नए प्रारूप आसानी से तैयार हो रहे है। " अनुसंधान और विश्लेषन :- AI साहित्यिक कार्यों के विश्लेषन भाषाई संरचनाओं के अध्ययन और शोध में नए दृष्टीकोन प्रदान करता हैं "|7 भाषाई संरचनाओं के अध्ययन में कृत्रिम बुद्धिमता का मुख्य प्रभाव दिखाई देता हैं |

"मौलिकता और मानवीय भावनाओं की कमी :- Al जनित साहित्य की रचना तकनिक रूप से सटिक होती है लेकिन इसमें मानवीय अनुभवों की गहराई सांस्कृतिक सुक्ष्मताएँ और भावनात्मक स्पर्श की कमी रहती है इससे लेखको मे यह आशंका है की कि A1 सृजनात्मकता को प्रस्थापित कर देगा"।8 एक शोध पत्र में उल्लेख है की AI हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक रचनाओंमें चुनौति याँ पैदा कर रहा है क्योंकि यह भारतीय संदर्भ को पूरी तरह समझ नहीं पाता। मौजूदा ज्ञान और इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री में अक्सर मौलीकता, नवीनता और मानवीय भावनात्मक गहराई कमी होती है। एक औसत लेखक तो बनाया जा सकता है लेकीन एक उत्कृष्ठ लेखक नहीं।

"भाषाई शुद्धता और सांस्कृतिक विकृति: क्योकी Al मॉडल्स मे अंग्रेजी का प्रभुत्व होने से हिंदी मे इंग्लीश का प्रसार बढ़ रहा है"| 9 अनुवादो मे सांस्कृतिक सौदंर्य गलन हो सकते है साथ ही कॉपीराइट और प्लेगरिज्म के मूद्दे उभर रहे है। क्योंकी AI मोजूदा साहित्य पर ट्रेन होता है। हिंदी के लिए उन्नत Al टूल्स अभी सिमित है जब की अंग्रेजी मे प्रचूर इससे हिंदी साहित्य के रचनात्मता का वैश्विक प्रसार बाधीता होता है।

कुछ पारंपारिक कौशल पर प्रभावः कुछ लोगों का मानना है कि AI का अत्याधिक उपयोग मनुष्य की प्राकृतिक बुद्धि और संज्ञानात्मक क्षमताओं को प्रभावित कर सकना है जिससे स स्वतंत्र

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

सोच और रचनात्मता कम हो सकती है। AI द्वारा निर्मित या पूरी तरह से AI द्वारा लिखी गई सामग्री का लेखक कौन माना जाएगा जिससे कॉपीराइड और बौद्धिक संपदा के मुरडे उठने है।

निष्कर्ष :

कृत्रिम मेधा रचनात्मकता को कई तरीकों से प्रभावित कर रही है, जिससे नई संभावनाओं के द्वारा खुल रहे है और साथ ही कुछ चुनौतियाँ भी सामने आ रहीं है। हिंदी साहित्य की रचनात्मकता पर AI का का प्रभाव अंततः इस बात पर निर्भर करेगा कि लेखक इस तकनीक का उपयोग कैसे करते है। AI को एक सहायक उपकरण के रूप में देखा जाना चाहिए न कि मानवीय रचनात्मकता के प्रतिस्थापन के रूप में।

यह तकनीक भले ही लेखको को अधिक कुशलता से काम करने, अपने क्षितिज का विस्तार करने और नए स्वरूपों में प्रयोग करने में सक्षम बनाती है। लेकिन यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि प्रोदयोगिकी के उपयोग के बावजूद मानवीय रचनात्मकता और मौलिकता हमेशा केंद्र में रहे।

संदर्भ सूची –

हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमता : वर्तमान स्थिती सांस्कृतिक चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएं

शोध आलेख कृत्रिम बुद्धिमता के युग में साहित्य समाज तथा संस्कृति भविष्य के अवसर एंव चुनौतियाँ -डॉ. रूबलारानी शर्मा

1. ola krutrim बेवसाइड एंव indian Express 2024-25
2. setu may शोध पत्र 202
3. Teach Panda-2025 ‘How Al is briaging india’s linguistic dividein publishing
4. Ijsl Journal-2025 “ Digital Storytelling ;The future of Literature in the Aje of Al
5. Google.com
6. setu may – 2025 हिन्दी साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता वर्तमान स्थिति सांस्कृतिक चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ
7. USRem शोध – हिंदी भाषा और डिजिटल युग अवसर और चुनौतियाँ